आओ, ख़ुद देख लो 7

दूल्हे का दोस्त

dūlhe kā dost

The Friend of the Bridegroom

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 7]

(Urdu—Hindi script)

© 2023 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage of Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/images/id-297283/; J. Kemp/R. Gunter https://freebibleimages.org/illustrations/ls-washing-feet/; K. Tuck 025-kt-cloud-backgrounds.jpg in https://media.freebibleimages.org/stories/FB_KT_Cloud_Backgrounds/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा से ही सब कुछ मिलता है 2

मेरी ख़िदमत बस तैयारी है 3

दूल्हे का दोस्त 3

वह बढ़ता जाए 5

इंजील, यूहन्ना 3:22-30 6

एक दिन यहया नबी के शागिर्द बेचैनी से अपने उस्ताद के पास आए। कहने लगे, "उस्ताद, जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।"

- **जब यहया बपतिस्मा देता था तो वह क्या करता था?**

  वह उन्हें पानी में डुबो देता था।

- **बपतिस्मे का क्या मक़सद था?**

  बपतिस्मा लेनेवाला इससे तसलीम करता था कि मैं गुनाहगार हूँ। अब से मैं बुरे ख़यालों और कामों से दूर रहकर आनेवाले मसीह के लिए तैयार रहना चाहता हूँ।

- **यहया नबी के शागिर्द क्यों इतने परेशान हैं?**

  ज़्यादा लोग ईसा मसीह के पास जा रहे हैं। यह कैसी बात है? इसका क्या मतलब है? क्या वह हमारा मुक़ाबला करना चाहता है? क्या वह हमारी ख़िदमत ख़त्म करना चाहता है? और फिर हमारे उस्ताद का क्या बनेगा?

ख़ुदा से ही सब कुछ मिलता है

► **क्या यहया नबी नाराज़ हुआ? क्या वह मायूस हुआ?**

नहीं। उसने बड़ी हलीमी से जवाब दिया : "हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है।"

कितना दिलचस्प जवाब।

► **यहया नबी क्या कहना चाहता है?**

सब कुछ अल्लाह तआला के हाथ से मिलता है। वही सब कुछ देता है। फिर मुझे बेचैन होने की क्या ज़रूरत है।

► **क्या यहया यह कहते हुए ख़ुश या दुखी है?**

वह ख़ुश है।

हम भी बहुत मौक़ों पर कहते हैं कि ऊपरवाले की मरज़ी।

► **अकसर औक़ात जब हम यह कहते हैं तो क्या हम ख़ुश या दुखी होते हैं?**

अकसर जब हम यह कहते हैं तो ख़ुश नहीं होते। हम मायूस होते हैं कि ख़ुदा ने वह होने नहीं दिया जो हम चाहते हैं। कहने का मतलब है, चलो, मैं मजबूर हूँ। ख़ुश नहीं हूँ मगर क्या करूँ?

लेकिन यहया मायूस नहीं है। वह कंधे उचकाकर नहीं कहता कि चलो ख़ुदा की मरज़ी। बिलकुल नहीं। वह ख़ुश है।

मेरी ख़िदमत बस तैयारी है

ख़ुशी की लहर यहया की हर बात से छलकती है : मैंने तो कहा था कि मैं मसीह नहीं हूँ। मुझे तो सिर्फ़ उसके आगे आगे भेजा गया है। मैं सिर्फ़ उसकी राह को तैयार करने आया हूँ। जिस तरह यसायाह नबी ने पेशगोई की थी,

> रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता सीधा बनाओ। [...] तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। (यसायाह 43:3)

मेरा बस एक ही काम है : इस राह को तैयार करना। जब ख़ुदा का जलाल मसीह में ज़ाहिर हो गया है तो मुझे मायूस होने की क्या ज़रूरत है? जो ख़िदमत मुझे दी गई है वह मुकम्मल हो गया है। मैंने रास्ता तैयार कर रखा है और बस। मेरी तरफ़ से कोई कमी नहीं रही।

मसीह का पैरोकार हमेशा ऐसा ही सोचेगा। असल उस्ताद और बादशाह वही है। मेरा काम बस उसकी राह की तैयारी करनी है। असल काम वही करता है। वही दिलों के क़िलों को तोड़कर अपना राज क़ायम करता है। हम इनसानों का इसमें कोई हाथ नहीं है।

दूल्हे का दोस्त

तब यहया नबी एक चौंका देनेवाली मिसाल पेश करता है : दूल्हा ही दुलहन से शादी करता है, और दुलहन उसी की है। दोस्त तो दोस्त ही है

चाहे कितना अच्छा दोस्त क्यों न हो। हाँ, दोस्त ज़रूर दूल्हे की ख़ुशी में शरीक होता है। दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर उसकी ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ।

► **दूल्हे की मिसाल से वह क्या कहना चाहता है?**

वह यह कहना चाहता है कि मसीह दूल्हा है जबकि मैं दूल्हे का दोस्त हूँ।

► **दोस्त से क्या मुराद है?**

उस ज़माने में शादी का पूरा इंतज़ाम दूल्हे के क़रीबी दोस्तों के हाथ में था। अकसर दो ऐसे दोस्त थे। उनकी ज़िम्मेदारी यह भी थी कि दूल्हे और दुलहन को सलामती से दूल्हे के घर पहुँचाएँ। उनकी बहुत अहमियत थी। तो भी वह शादी का मरकज़ और मक़सद नहीं थे बल्कि दूल्हा और दुलहन। शादी ख़त्म हुई तो दूल्हे के यह दोस्त ख़ामोशी से चले जाते थे।

► **यहया के नज़दीक दूल्हा कौन है?**

दूल्हा ईसा मसीह है।

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

मरकज़ी बात दूल्हा है। मैं सिर्फ़ उसका दोस्त हूँ जो शादी की तैया-रियों में लगा रहता हूँ। मुझे तो दुलहन से शादी नहीं करनी है। मेरा बस यह फ़र्ज़ है कि शादी के इंतज़ाम पर ध्यान दूँ। दूल्हे की आवाज़

सुनकर ही मेरी ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। और शादी की तकमील पर मेरा काम भी ख़त्म हो जाएगा।

► **तो फिर दुलहन कौन है?**

इसके लिए हमें थोड़ी गहराई में जाने की ज़रूरत है।

नबियों ने सदियों पहले फ़रमाया था कि एक मसीहाना वक़्त आएगा जब ख़ुदा अपनी क़ौम को यों क़बूल करेगा जिस तरह दूल्हा अपनी दुलहन को। यसायाह उस वक़्त के बारे में फ़रमाता है,

> जिस तरह दूल्हा दुलहन के बाइस ख़ुशी मनाता है
> उसी तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी मनाएगा।
> (यसायाह 62:5)

यहया नबी यह कह रहा है कि अब यह वक़्त आ गया है। अल-मसीह आ गया है। वही दूल्हा है। और उसकी दुलहन उसकी क़ौम है, वह जो उस पर ईमान रखते हैं। मसीह अपनी क़ौम को बुलाने आया है, और यह बड़ी ख़ुशी की बात है। अब तक मैं दूल्हे की तैयारियों में लगा हूँ क्योंकि मैं उसका दोस्त हूँ। लेकिन इंतज़ाम करवाने का मेरा काम ख़त्म होनेवाला है और मैं बड़ा ख़ुश हूँ। मैं किस तरह ग़म खा सकता हूँ?

वह बढ़ता जाए

तब यहया नबी एक गहरी रूहानी हक़ीक़त बयान करता है : लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

अहम बात मसीह है। मेरी ख़िदमत उसकी निसबत सिफ़र है। जब वह आ मौजूद हुआ है तो मेरा काम ख़त्म होनेवाला है। उसकी तारीफ़ हो। बस यह बात अहम है कि उसे जलाल मिले, वही बढ़ता जाए। दूल्हे को देख देखकर मेरी ख़ुशी पूरी हो गई है।

एक बार मसीह ने फ़रमाया, "जो अव्वल होना चाहता है वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम हो" (मरक़ुस 9:35)। यहया में यही ख़ादिमाना रूह थी। वह सबकी ख़िदमत करने को तैयार था। बस, दूल्हे को ख़ुश रखना है।

कुछ दिनों बाद यहया नबी शहीद हुआ।

► **क्या उसकी ख़िदमत बेफ़ायदा थी?**

बिलकुल नहीं। जो काम उसे दिया गया था वह मुकम्मल हुआ था। मसीह की राह तैयार हुई थी। दूल्हा आ गया था।

इंजील, यूहन्ना 3:22-30

इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। उस वक़्त यहया भी शालेम के क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था।

उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-ग़ौर मज़मून दीनी ग़ुस्ल था। वह यहया के पास आए और कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आपकी दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई और जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।”

यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। तुम ख़ुद इसके गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे आगे भेजा गया है।’ दूल्हा ही दुलहन से शादी करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई है। लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।